International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 62-64

कैलाश चंद चौहान कृत 'भंवर' दलित उपन्यास में प्रतिरोधी स्वर

अनुराधा सिंह

शोधार्थिनी, दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

दलित प्रतिरोध को समझने से पूर्व प्रतिरोध को समझना अति–आवश्यक है। रोकने के भाव में रोध, अवरोध की प्रकृति को ही प्रतिरोध की संज्ञा दी जाती है। प्रतिरोध स्वयं पर अधिरोपित, स्वयं में समाहित दृढ़ एवं कठोर वैचारिकी है जिसकी प्रकृति पहले से निर्धारित अवयवों के बलात् आरोहण को संचालन को रोकना है। जब कोई व्यक्ति गलत बात को बौद्धिक स्तर पर नकारने लगे तो वह स्थिति प्रतिरोध कहलाती है।

कमलेश्वर के अनुसार–'' जातीय स्वाभिमान को छोड़कर इस साहित्य में भारत के दलित और वंचित मनुष्यों की अस्मिता की आवाज है।''[1]

डॉ. आयुष्मान सत्यप्रेमी के अनुसार–''दलित शब्द दबाए गए शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित अर्थों में जब जुड़ता है, तो यह विरोध का एक नकार का संकेत करता है यह नकार चाहे व्यवस्था का हो, सामाजिक विसंगतियों, धार्मिक रूढ़ियों, आर्थिक विषमताओं, साहित्यिक परंपराओं, मानदण्डों या सौन्दर्याशास्त्र का हो दलित साहित्य नकार का साहित्य है, जो संघर्षों से उपजा है। वर्ण व्यवस्था से उपजे जाति भेद विरोध है।''[2]

भंवर उपन्यास में दलित समाज पर हो रहे शोषण का चित्रण लेखक ने अपने पात्रों के माध्यम से दृष्टिपात किया है तो वहीं दूसरी ओर व्यक्ति किस प्रकार जाति–मुक्ति के भंवर में फंसा है इसकी दास्तां को बयां किया है। जातीय छुआ–छूत और भेदभाव से बचने के लिए दलित समाज का शिक्षित होना और सवर्णों के बीच जाति छिपाकर रहना है। इसी कारणवश व्यक्ति की पारिवारिक दूरियां बढ़ जाती है। परिवार, समाज, जाति के संबंध, भ्रष्टाचार, पुरुष–सत्ता, स्त्री विमर्श इत्यादि इतने भंवर हैं जिनसे निकलने का प्रयास मानव कर तो रहा है परन्तु वह एक भंवर से निकलता है परन्तु समाज में छाई हुई विसंगतियों के भंवर में फिर से जा गिरता है। यह उपन्यास ज्वलन्त मुद्दों को प्रतिरोधी चेतना के रूप में लेखक ने पाठकों के समक्ष अपने अनुभवों को वास्तविक धरातल पर चित्रित किया है।

पुष्पा एक शिक्षित स्त्री है जो पढ़ी–लिखी होने के बावजूद भी एक अनपढ़ घर में शादी कर लेती है लेकिन जब उसे यह लगता है कि घर से बाहर नौकरी नहीं करने दिया जायेगा तो वह तो उसे लगता है कि उसका पढ़ना कहीं व्यर्थ ही न चला जाए इसलिए वह घर से बाहर नौकरी करने के और अपने ससुराल वालों को इस बात के लिये राजी कर सके इसलिए वह निरंतर संघर्षरत प्रयास करती रहती है। उसे ऐसा लगता है कि उसका पढ़–लिखकर क्या फायदा जब जिन्दगी इस तरह से चौका बर्तन करने में ही बितानी थी तो–

> ''ऐसा नहीं है पुष्पा की ससुराल में केवल वही पढ़ी लिखी आई थी, लड़के कम पढ़ते हैं और लड़कियां ज्यादा. फलस्वरूप ज्यादा पढ़ी–लिखी लड़कियां भी कुछ कम पढ़े–लिखे लड़कों के साथ ब्याह दी जाती हैं, जो जरा बहुत भी ठीक–ठीक जगह काम करता हो, उसके साथ उससे ज्यादा पढ़ी–लिखी लड़की ब्याह देना आम बात है. पड़ोस में ही सुलेखा नाम की बहू थी. उसकी सास बड़ी खुश होकर बताती कि उसकी बहू बी.ए. पास है, लेकिन नाम को घमंड नहीं है.
> सुलेखा जब भी कमरे से बाहर निकलती, वह लंबे घंघूट में होती. बाजार भी घूघंट में जाती. उसकी जिंदगी घूघंट और दो बच्चों व घर के कामों में बीत रही थी. उसका पढ़ा–लिखा होना शायद अब कोई मायने नहीं था. घूघंट में पुष्पा भी रहती थी. लेकिन वह लगातार इससे छुटकारा पाने का संघर्ष कर रही थी.''[3]

जब बात लड़की आती है तो दुनिया के हर नियम कानून बन जाते है लोकेश की मां पुष्पा को पसंद नहीं करती थी इसलिए उन्होंने लोकेश से यह कह दिया कि बहू की मां को यहां लाने की जरूरत नहीं है कौन उनकी देखभाल करेगा। पुष्पा अपनी बात लोकेश के समक्ष रख पाती उससे पूर्व ही लोकेश बोल पड़ा कि अपनी मां को यहां लाने की जरूरत नहीं है। तुम अगर अपनी मां को घर में लाओगी तो घर में प्रतिदिन कलह–कलेश का माहौल व्याप्त रहेगा। अकेली मां का दर्द सिर्फ एक लड़की ही समझ सकती है पुष्पा के भाई की पत्नी का व्यवहार अच्छा नहीं था इसलिए वह मां के प्रति अधिक चिंतित थी। लोकेश का कहना है पुष्पा से कि तुम्हारा मेरे मां–बाप के प्रति कोई फर्ज़ नहीं है–

> ''हां जरूर है. मैंने कब मना किया है, लेकिन उनकी हर गलत बात मान लो यह भी ठीक नहीं. उनके पास तो दो बेटे और हैं, मेरी मां के लिए सहारा तो केवल मैं हूं, दूसरा कोई नहीं.''[4]

इस देश के हमेशा से एक परंपरा रही है कि स्त्री चाहे कितना भी अपने ससुराल वालों के लिए अच्छा कर ले लेकिन जब बात लड़की के घर वालों को अपने घर में रखने की आती है तो ससुराली कुछ न कुछ बहाने बना लेते है जिससे की लड़की के घर वालों को उनके घर आना न पड़े और अगर आ भी जाए तो लड़की के परिवारिजनों के प्रति अभद्र व्यवहार किया जाता है जिससे वह स्वयं ही घर छोड़कर चले जायें। ऐसी की स्थिति का चित्रण इस उपन्यास में लेखक ने किया है पुष्पा अपनी मां को घर ले तो आती है लेकिन लोकेश पुष्पा से कहता है कि घर में शांति बनाए रखना अतिआवश्यक है इसलिए वह अपनी मां को अपने घर से भेज दे तब पुष्पा लोकेश की बातों का विरोध करती हुई कहती है कि–

> ''दिखा दी न अपनी औकात. लेकिन इतना समझ लो, मैं उस जमाने की औरत नहीं हूं जिस जमाने में मां थी. मां को हक लेना नहीं आया. लेकिन मैं अपना हक सीधी अंगुली से ना मिले तो टेड़ी अंगुली से लेना जानती हूं. दूसरी बात, मैं पूरी जिंदगी मां की तरह अकेले भी नहीं बिताऊंगी. मैं तुम्हें छोड़ने के बाद दूसरी शादी करना भी जानती हूं, और अपना हक लेना भी.''[5]

बिमला की मां को टायफायड हो जाता है यह बात जब उसे पता चलती है तो वह अपनी मां के पास जाने के लिये बेचैन हो जाती है। ईश्वरी लाल जिसे टायफायड जैसी बीमारी के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है उसे लगता है कि तीन महीने का उसका बेटा अगर बिमला के घर जायेगा तो उसे भी टायफायड हो जाएगा। ईश्वरी लाल से बिमला कहती है कि मैं अपनी मां को देखने हर हालत में जाऊंगी और अपने बेटे को उनसे दूर रखूंगी। जब लड़की हृदय से सोचती है तो वह दुनिया ही हर बात का प्रतिरोध करने का ताकत रखती है बिमला कहती है चाहे दुनिया इधर की उधर ही क्यों न हो जाये यह मेरा हक है कि मैं अपनी मां का हर हाल में साथ दूं यह बात सुनकर ईश्वरीलाल ने कहा कि तू बड़े ही हक की बात कर रही उसके पश्चात् गाल पर दो थप्पड़ लगा दिये–

> ''मारो कितना मारोगे. मुझे जाना है तो जाना है. मां को जब तक देख न लूंगी मुझे चैन नहीं मिलेगा.'' औरत जिद पर जाए तो उसे पूरा करके ही मानती है, लेकिन यहां तो बीमार मां को देखना उद्वेलित कर रहा था.''[6]

बिमला जब ज्यादा ही जिद् करती है कि वह अपनी मां को देखने जाएगी तो ईश्वरी लाल उससे कहता है कि ठीक है उसे जाना है तो जाए लेकिन इस घर में लौट कर मत आना। बिमला कहती है कि ठीक है। जब बिमला की मां ठीक हो जाती है तो वह अपने ससुराल आती है तो देखती है कि उसके पति ने दूसरी शादी कर ली। बिमला को यह बात बर्दाशत नहीं होती है तो वह अपनी सौतन को घर से बाहर निकलने को कहती है लेकिन ईश्वरी लाल कहता है कि यह कही नहीं जाएगी तुम्हें जाना है तो जाओ ये तो यहीं रहेगी। बिमला के ससुर कहते है कि बहू तू यहीं रह ले तूझे खाने–पीने की कोई कमी नहीं होगी उसे भी रहने दे और तू भी रह ले। जब लड़की के वजूद की उठती है तो ऐसी बातों विरोध करती है और कहती है कि–

> ''केवल पेट भरने से जीवन नहीं चलता बापू बेटा. पेट तो मैं अपने पीहर में भर लूंगी. हाथ पैर हैं मेरे, कमा के खा लूंगी. लेकिन सौत के रहते हुए यहां नहीं रहूंगी. वो रहेगी या मैं. एक मियान में दो तलवार संभव नहीं.''[7]

हमारे भारत में एक रीत सदियों चली आई है कि लड़की कितना भी पढ़–लिख जाये लेकिन वह कहीं भी नौकरी नहीं कर सकती है उसे अपने पति के अधीन ही रहना है वह उससे कुछ अलग होकर अपना अस्तित्व ही नहीं सोच सकती है लेकिन पुष्पा इन दकियानुसी बातों का विरोध करती हुई, अपने भाई से कहती है कि–

> ''मैं अपना गुजारा खुद कर लूंगी, तुम्हारे ऊपर बोझ ना बनूंगी. हाथ–पांव हैं मेरे, लूली–लंगडी ना हूं मां. पर उनके यहां ना रहूंगी.''[8]

कहते है न जब लड़की शादी के बाद अपने पीहर आये तो उन पर बोझ बन जाती है और ससुराल वालों के समक्ष सही बात रखे तो उन्हें वह कांटे की तरह चुभने लगती है। बिमला ने अपने मां के प्रति फर्ज़ समझते हुए अपने भाई से कहती है कि मैं तुम्हारे ऊपर बोझ नहीं बनाऊंगी अलग झोपड़ी लेकर अपनी जिन्दगी बसर कर लूंगी। लड़कियों का इसीलिए पढ़–लिख जाना आज के समय में आवश्यक है क्योंकि वह जिंदगी के सफर में आने वाली विविध समस्याओं का डटकर सामना कर सके।

रामनाथ और धर्म सिंह ठाकुर वर्ग के है जिसमें धर्म सिंह को यह लगता है कि वह गांव की किसी भी लड़की के साथ दुर्व्यहार करेगा और कोई उससे कुछ कहेगा भी नहीं ऐसी नीच हरकत उसने बिमला के साथ करने की सोची तो बिमला धर्म सिंह को मारकर जैसे तैसे वहां से भाग निकली और उसने सारी बात अपने पिता को बता दी धर्म सिंह से सभी इस बात से परेशान थे कि वह उच्च जाति का है तो वह हमारी बेटी बहूओं के साथ दुर्व्यवहार करेगा और तो क्या हम चुप बैठेगे। सारी गांव हाथों में लाठियां लेकर धर्मसिंह को मारने के लिये निकल पड़े। समस्त गांव ठाकुरों का विरोध करते हुए एक साथ लड़ने के लिये खड़े हो जाते है, जिसका चित्रण कुछ इस प्रकार है–

> ''ठाकुर साहब बहुत हुआ. अपनी बहू बेटियों पर होने वाले अत्याचार अब नहीं सहेंगे. हम तुम निर्भर नहीं हैं, जो तुम्हारे बिना हमारा काम नहीं चलेगा. बल्कि तुम्हारा ही काम हमारे बिना नहीं चलेगा.....''[9] श्याम लाल एक सांस में बोलते गये.

धर्म सिंह ने भूरे की लड़की के साथ बुरा व्यवहार किया था अर्थात् लड़की के साथ बुरी हरकत की और उस लड़की ने शर्मिंदा होने के कारण डूबकर अपनी जान दे दी शायद ऐसे व्यक्तियों को तभी जबाव दे दिया होता तो आज किसी दूसरे व्यक्ति के साथ कुछ बुरा नहीं होता। बिमला के साथ बुरा होने के कारण श्याम लाल आग बबुला हो गये और उन्होंने धर्म सिंह को मिलकर लाठियों से पीट दिया। जब गांव के ठाकुर रामनाथ को धर्म सिंह की हरकतों का पता चला तो वह उसे देखने पहुंचे तो उन्होंने देखा की गांव वालों ने धर्म सिंह को पीट दिया तो उन्होंने भी उसके गाल पर थप्पड़ जड़ दिये और कहा अगली धर्म सिंह ऐसी हरकत करे तो उसे मार दिया जाए वह कुछ भी नहीं बोलेंगे।

> ''विरोध न करो तो सामने वाला अगली बार और अधिक ताकत के साथ सामने आता है. इसलिए विरोध करना जरूरी था, वरना धर्म सिंह ही नहीं, दूसरे लोगों की भी और ज्यादा हिम्मत बढ़ती.''[10] श्याम लाल अपने साथ आए सभी लोगों को कहते हुए आ रहे थे.

बिमला के सभी परिवारीजन लड़की की शिक्षा के खिलाफ है तथा उनका मानना है कि लड़कियों को घर के काम चौका–बर्तन करने सिखाओ। नाना–नानी और भइया–भाभी के लाख मना किया की पुष्पा को स्कूल नहीं भेजा जायेगा इसे घर में बिठाओ। लेकिन कहते न मां जो स्वयं सहती वह नहीं चाहती की उसकी सन्तान को किसी भी प्रकार से कष्ट का सामना करना पड़े। बिमला नहीं चाहती थी कि जिन खुशियों से वह स्वयं मोहताज रही वह पुष्पा को उन खुशियों से मोहजात नहीं रखना चाहती थी वह पुष्पा को देखती थी तो उसे लगता था कि उसके सपनों को पुष्पा के द्वारा ही पूर्ण हो सकेंगे इसलिए वह अपनी बेटी पुष्पा की शिक्षा के लिए अपने समस्त परिवार का प्रतिरोध करती है–

> ''पढ़ाने का कोई फायदा है इसे? जो पढ़ाने की जिद पर अड़ी है. यह कहीं न कलेक्टर बनेगी. चौका–चूल्हा ही संभालना है इसे. वो ही सिखा.''
> ''जरूरी नहीं है बापू, लड़कियां चौका–चूल्हा ही संभालें. ठाकुरों, ब्राह्मणों की लड़कियों जब साइकिल पर बैठकर स्कूल जा सकती हैं तो हमारी क्यों नहीं?''[11]

सदियों से चले आ रही दकियानुसी मानसिकता का विरोध को दर्शाया गया है। पुराने लोगों का मानना यह रहता है कि बहू बेशक ऊंची जाति की आ जाए निम्न जाति में आ जाए तो कोई

बात नहीं लेकिन जब अपनी ही बेटी का ब्याह ऊंची जाति में करनी पड़ती है तो माता–पिता के कदम आगे बढ़ने से रुक जाते है वह यह सोचने लगते हैं कि अगर उसकी बेटी से कोई गलती हो भी गई तो उसके ससुराल वाले उसे नीच जात का कहकर उसका तिरस्कार करेंगे। रिश्ता अपने से नीची जात का हो तो वह भी कबूल नहीं होता ऐसा करने से उनका समाज में सिर झुक जायेगा। रिश्ता हो तो बराबरी का हो वरना न हो–

> ''पुरानी मानसिकता की सोच का एक नजरिया यह भी है कि बहू बेशक ऊंची जाति से आ जाए कोई दिक्कत नहीं, उसके परिवार को परेशानी नहीं होनी चाहिए. लेकिन अपनी बेटी की शादी अपने से ऊंची कही जाने वाली बिरादरी में नहीं करना चाहते, यह सोचकर कि जहां चार बरतन होंगे बजेंगे ही के तहत ससुराल में कोई बात हो गई तो उनकी लड़की को 'रही न नीच जात की' जैसी बातें सुनने को मिलेंगी. यही नहीं, खुद की बिरादरी से नीचे कही जाने वाली जाति में भी अपने बच्चों का विवाह ठीक नहीं मानते.''[12]

सुधाकर की मां रात भर इस कश्मकश में रही की अनामिका की मां को वह रिश्ते के लिये कैसे मना करे उसने सोचा था कि अनामिका दलित भी होती तो चलता लेकिन वाल्मीकि जाति तो उनकी जाति से भी नीची है। सुधाकर अपनी मां से कहता है कि मां आप अपनी बात कहें बातों को गोल गोल न घुमाये पुष्पा जो अनामिका की मां ने सुधाकर का समथर्न करते हुए कहा कि हां कहिए–

> ''तो सुनो बहनजी. हमें बाद में पता चला के आप लोग वाल्मीकि जाति से है. हम चमार हैं. हम किसी भी हालात में वाल्मीकि जाति में रिश्ता नहीं कर सकते.''[13]

जब सुधाकर को लगा की जातिवाद की वजह से अनामिका जैसी सीधी सुलझी लड़की को खो देगा तो उसने अपनी मां से कहा कि मां मैं इस जातिवाद को नहीं मानता मैं शादी करूंगा तो उसी से करूंगा वरना किसी से भी नहीं करूंगा। सुधाकर द्वारा जातिवाद का प्रतिरोध किया गया है–

> ''लेकिन मम्मी मैं तो जातपात को मानना ही नहीं. मैं अनामिका से ही शादी नहीं करूंगा, बस.'' सुधाकर मुखर हुआ.
> यह संभव नहीं है सुधाकर.'' लाजवंती के कहने का लहजा सख्त हुआ.
> ''क्यों संभव नहीं है, बताइए? मैं किसी भी अनजान लड़की से शादी नहीं करूंगा. मैं उनमें से नहीं हूं, मां–बाप ने जिससे चाहा उसके पल्लू बांध दिया.''[14] सुधाकर पर उस सख़्त लहजे का असर नहीं हुआ.

ऐसी ही सोच अगर समाज के प्रत्येक व्यक्ति की हो जाये तो समाज में उंच–नीच की भावना ही समाप्त हो जाए।

निष्कर्ष

उपुर्यक्त विवेचन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि भंवर उपन्यास में दलित समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में हो रहे सुख–दुःख, उनकी सामाजिक, राजनीतिक स्थितियां, उनके शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ प्रतिरोधी चेतना का चित्रण लेखक ने बेबाकी कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है। भंवर उपन्यास में पात्रों के माध्यम से लेखक ने व्यक्ति की प्रत्येक समस्याओं को उजागर किया है साथ ही जब स्त्री पर दुःखों का पहाड़ टूटता है तो वह लाचार और बेबस हो जाती है लेकिन भंवर की नारियां की सोच इसे परे है और वह अपने हक के लिये लड़ती हुई दिखाई गई है। जब व्यक्ति पर शोषण हो तो उसे चुप होकर सहना नहीं चाहिए अपितु उसके खिलाफ आवाज उठाना ही प्रतिरोध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी और मराठी दलित साहित्य एक तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. सुरेश मारुतिराव मूले, नवभारत प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–2007, पृ.–81।
2. हिन्दी और मराठी दलित साहित्य एक तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. सुरेश मारुतिराव मूले, नवभारत प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–2007, पृ.–83।
3. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–101–102।
4. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–104।
5. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–105।
6. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–114।
7. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–117।
8. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–120।
9. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–129।
10. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–130।
11. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–132।
12. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–147।
13. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–153।
14. भंवर, कैलाशचन्द चौहान, सम्यक् प्रकाशन, पृ.–154।